

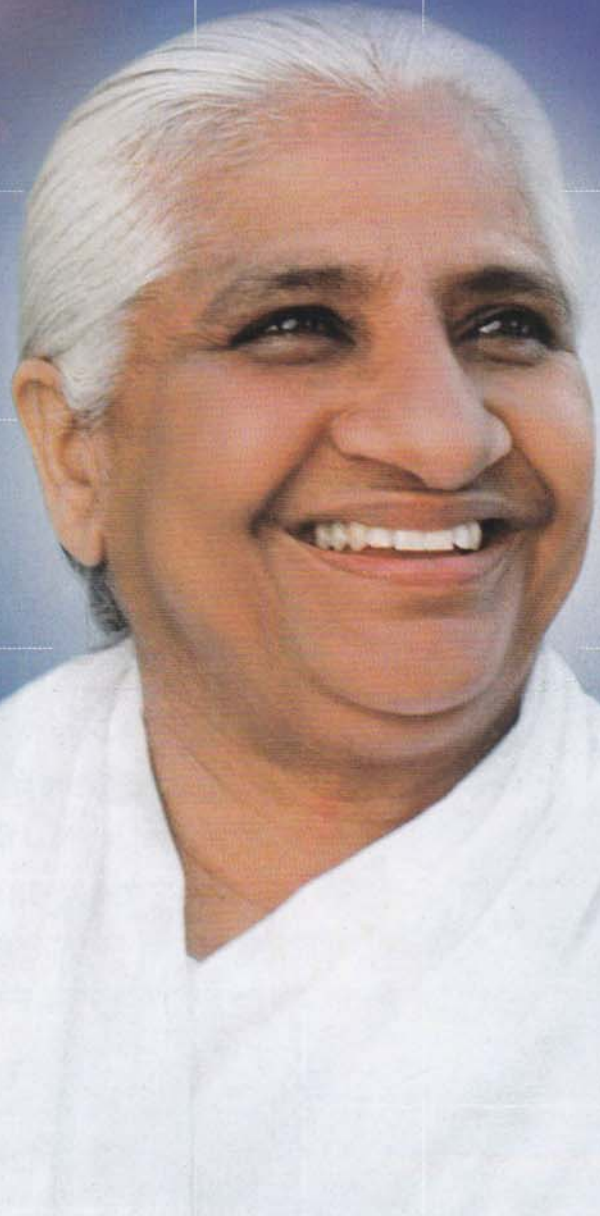
परमपिता शिव परमात्मा
गीता-ज्ञान-दाता

(मासिक)

ज्ञानामृत

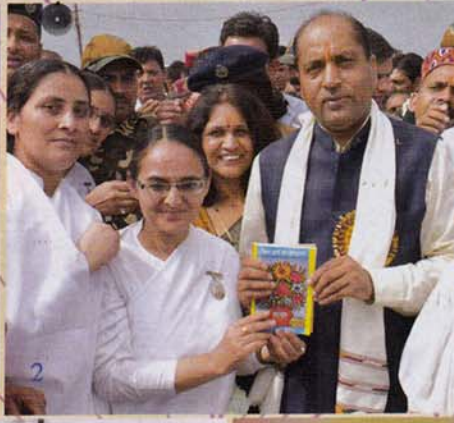
वर्ष 54, अंक 2, अगस्त, 2018

मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी
ग्यारहवीं पुण्यतिथि (25 अगस्त, 2018)





1. गारियाधार : गुजरात के मुख्यमंत्री विजय भाई रूपाणी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. दीपा बहन। 2. मण्डी : हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भाता जयराम ठाकुर को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. दीपा बहन। 3. दिल्ली (मण्डावली) : दिल्ली के उप-मुख्यमंत्री भाता मनीष सिंसोदिया को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्रह्माकुमारी सुनीता बहन। साथ में ब्रह्माकुमार जगरूप भाई। 4. देहरादून : विश्व योग दिवस पर योग प्रोटोकॉल ट्रेनिंग के परचात उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री भाता त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी, योगगुरु बाबा रामदेव जी, ब्रह्माकुमार सुरील भाई, ब्रह्माकुमारी शालू बहन तथा अन्य समूह चित्र में। 5. ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत) : ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र के कृषि राज्यमंत्री सदाभाऊ खोते, म.प्र. गोपालन व पशुसंवर्धन बोर्ड उपाध्यक्ष भाता संतोष जोशी, ब्रह्माकुमार बंदीविशाल, ब्रह्माकुमार करुणा भाई, ब्रह्माकुमारी सरला बहन, जीबीपीयूएटी कुलपति डॉ. ए.के. मिश्रा, ब्रह्माकुमार राजू भाई तथा ब्रह्माकुमारी तृप्ति बहन। 6. ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत) : न्यायवेत्ताओं के राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ए.के. पटनायक, उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश, पदमश्री भाता रघुबीर सिंह, सिरोंही पूर्व महाराजा, भाता ए.एस. पच्चापुरे, कर्नाटक उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश, ब्रह्माकुमार माहेश्वरी भाई, भाता श्रीकांत नायक, उड़ीसा उच्च न्यायालय बार-एसोसिएशन अध्यक्ष, भाता बी.बी. गुप्ता, न्यायमूर्ति, दिल्ली, ब्रह्माकुमारी पुष्पा बहन तथा ब्रह्माकुमारी लता बहन। 7. ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत) : 'महिला मूल्यनिष्ठ समाज की पथ-प्रदर्शक' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारी डॉक्टर निर्मला बहन, ब्रह्माकुमारी चक्रधारी बहन, ब्रह्माकुमारी शारदा बहन, बहन कल्याणी शरण, अध्यक्षा, महिला आयोग, झारखण्ड, बहन अनीता माखीजानी, उप-निदेशक, भारत सरकार, बहन श्वेता डागर, दंत चिकित्सक, ब्रह्माकुमारी शीला बहन तथा ब्रह्माकुमारी डॉक्टर सविता बहन। 8. उदयपुर (प्रताप नगर) : 'ज्ञान-योग अनुभूति भवन' की उद्घाटन पट्टिका का अनावरण करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी। साथ में ब्रह्माकुमारी मुनी बहन, ब्रह्माकुमार मृत्युंजय भाई, ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश भाई, ब्रह्माकुमार भूपाल भाई एवं अन्य। 9. पटिया (भुवनेश्वर) : आई.टी. कांफ्रेंस के उद्घाटन में भाग लेते हुए भाता रूद्र नारायण पलई, सेक्रेटरी, आई.टी. विभाग, भाता प्रकाश चन्द्र पटी, डेप्युटी डायरेक्टर, प्रसार भारती, भाता मानस पंडा, डायरेक्टर, एस.टी.पी.आई., ब्र.कु. लीना, ब्र.कु. गिरीश, ब्र.कु. यशवंत, ब्र.कु. सविता एवं ब्र.कु. संजीव गुप्ता।

आत्म-विश्वास

संसार के इतिहास को पढ़ने से पता लगता है कि किसी व्यक्ति, समाज अथवा देश की सफलता का एक मुख्य कारण आत्म-विश्वास रहा है। कहते हैं कि एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा था कि लड़ाई में शत्रु के विरुद्ध काम आने वाला सबसे बड़ा शस्त्र कौन-सा है? तब बीरबल ने किसी स्थूल शस्त्र का नाम न लेकर आत्म-विश्वास को ही सबसे बड़ा शस्त्र बताया था। जो बात उसने युद्ध के प्रसंग में सफलता के लिये कही थी, वह वास्तव में संसार के हरेक क्षेत्र में चरितार्थ होती है।

किसी ने सब कहा है कि 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।' जिनके मन में आत्म-विश्वास का स्रोत कभी सूखता नहीं, वे अन्ततोगत्वा विजय माला से सुशोभित होते हैं। वे न केवल स्वयं सफलता और सिद्धि को प्राप्त होते हैं बल्कि अपने सम्पर्क में आने वाले जन-मन को भी उमंग, उत्साह तथा आत्म-विश्वास की प्रबल भावना से भर देते हैं। वे अपने क्रियात्मक जीवन से दूसरों को भी 'निश्चयात्मा विजयन्ति' का अनमोल पाठ पढ़ा देते हैं। वे प्रभु के आगे यह प्रार्थना करते हुए नहीं सुने जाते कि प्रभु उन्हें काम, क्रोध, लोभ, मोह इत्यादि से छुड़ाएँ बल्कि वे आत्म-विश्वास से तथा उस परमपिता परमात्मा की सहायता में निश्चय करके सफलता के मार्ग पर दृढ़तापूर्वक दिनों-दिन आगे बढ़ते चले जाते हैं।

रामायण की कथा में एक प्रसंग आता है जिसका भाव यह है कि राम के सेवक हनुमान यद्यपि असीम बल से युक्त थे तथापि वे कभी-कभी अपनी शक्तियों को भूल जाते थे और ऐसी स्थिति में किसी कठिन कार्य को करने में साहस को कमी अनुभव करते थे। परन्तु, कोई उनके बल को उन्हें पुनः स्मृति दिलाता था तो उनमें पुनः आत्म-विश्वास का आविर्भाव हो जाता था, तब वे स्वयं को असाधारण शक्ति से सम्पन्न अनुभव करते थे और कठिन-से-कठिन कार्य सम्पन्न कर लेते थे।

आत्म-विश्वास का यह अर्थ नहीं है कि स्थिति का पूरी तरह मूल्यांकन किये बिना तथा उसके परिणामों को सोचे बिना ही हम कर्म के लिए कूद पड़ें। जोश यदि अकेला हो तो मनुष्य को संकट में डाल देता है परन्तु यदि होश भी साथ हो तो बड़े कठिन कार्य भी सध जाते हैं। अतः हममें जितना ही प्रबल एवं अटूट आत्म-विश्वास हो उतनी ही हममें कर्म के परिणाम को शीघ्रता से जानने की शक्ति भी होनी चाहिए।

जितना ही मन में आत्म-विश्वास हो, यदि उतनी ही गम्भीरता भी हो तो हम लोगों के स्नेह-भाजन भी बन सकते हैं और दूसरों का आशीर्वाद पाते हुए निश्चय ही सफलता के प्रांगण में प्रवेश पा सकते हैं।

अमृत-सूची

- ◆ रक्षाबन्धन-एक... (संपादकीय)4
- ◆ दादी जी की अविस्मरणीय7
- ◆ कतल करे (कविता)9
- ◆ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के ..10
- ◆ अपने संकल्प के रचयिता12
- ◆ बाबा की कुटिया में घटित 13
- ◆ पत्र संपादक के नाम 14
- ◆ सच्चा दोस्त कौन?15
- ◆ जाग! जाग! रक्षा कर (कविता).....18
- ◆ श्रद्धांजलि.....18
- ◆ वेद की वैराग्य वृत्ति19
- ◆ श्रद्धांजलि.....21
- ◆ महिला सशक्तिकरण22
- ◆ इन्द्रियों की गुलामी.....24
- ◆ उसने मुझे ढूँढ़ लिया (कविता)... 25
- ◆ क्या गुस्ता सहज और 26
- ◆ सचित्र समाचार 29
- ◆ भगवान को क्या जवाब दोगे!.. 30
- ◆ सचित्र समाचार 32
- ◆ युग प्रबोधनी बातें एक.....34

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजोवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क 'ज्ञानामृत' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription

Bank Name	State Bank of India
A/c Holder Name	Gyanamrit
A/c No.	30297656367
Branch Name	PBKIVV, Shantivan
IFSC Code	SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
 Mobile : 09414006904, 09414423949
 Email : hindigyanamrit@gmail.com
 : omshantipress@bkivv.org

रक्षाबन्धन - एक मीठी प्रतिज्ञा

एक राजा अपने जलयान से यात्रा करते हुए जब एक छोटे-से द्वीप के पास से गुजरे तो उन्हें एक नारी की चीत्कार सुनाई दी। राजा अपने सेवकों के साथ उस ओर दौड़ पड़े जिधर से आवाज आ रही थी। उन्होंने देखा, कुछ दस्यु एक स्त्री को पीट रहे थे। स्त्री कह रही थी, दुष्टों, मैं भारतीय नारी हूँ, शील मेरा धर्म है, मैं तुम्हारी दुष्टता के आगे झुकूँगी नहीं, चाहे मेरे प्राण ही क्यों न ले लो।

राजा के ललकारने पर दस्यु भाग खड़े हुए। राजा ने उस स्त्री के समीप जाकर पूछा, भद्रे, आपका परिवार कहाँ है, मैं आपको वहाँ पहुँचा देता हूँ। स्त्री बोली, राजन, दस्युओं ने मेरे पति को मार दिया है, मेरे पुत्र मुझे छोड़कर पहले ही अलग हो चुके हैं, अब मैं किस परिवार के साथ रहूँगी? राजा ने कहा, इसका प्रबन्ध हम अपने राज्य में पहुँचकर कर देंगे। इसके बाद उस स्त्री को साथ लेकर राजा अपनी राजधानी की ओर चल पड़े।



राजधानी में राजा का भव्य स्वागत हुआ। उपस्थित जन समुदाय में मन्त्री, सामंत, सभासद, आम जनता आदि सब थे। राजा ने उस स्त्री से कहा, भद्रे, इन आगन्तुकों में से तुम जिसे अपने पति-पुत्र के रूप में चुनना चाहो, चुन सकती हो। तुम्हारे सुखी जीवन के लिए मैं सारी व्यवस्थाएँ जुटा सकता हूँ।

स्त्री की आँखें छलक उठीं। उसने कहा, 'राजन, मेरा पति था, जिसने मुझे अपनी वासना से जकड़ा, मुझे घर की चारदीवारी में बंद कर मेरा स्वास्थ्य लूटा। मुझे ऐसा भी नहीं

रहने दिया कि मैं आततायियों का मुकाबला कर सकती। अशिक्षा, अज्ञान में जकड़ो रह गई मैं। पति की प्रवचना ने मुझे दासी बनाकर छोड़ दिया। इसलिए अब मुझे पति नहीं चाहिए।'

'और पुत्र' उसने आगे कहा, 'पुत्रों को मैंने अपनी देह का सारा रस-रक्त पिला दिया, स्वयं कष्ट झेले, पर उनकी सेवा, शिक्षा और पालन-पोषण में कमी न आने दी। वही पुत्र जब बड़े हुए तो उनसे इतना भी नहीं बन पड़ा कि गाढ़े संकट में मेरी रक्षा करते। ऐसे कृतघ्न पुत्र लेकर भी अब मैं क्या करूँगी?'

'हाँ, जो मेरे शील, मेरे धर्म की रक्षा कर सके मुझे ऐसे साहसी और चरित्रवान भाई की आवश्यकता अवश्य है, यदि आप कर सकते हैं, तो मेरे लिए एक भाई की ही व्यवस्था कर दें।'

राजा ने उपस्थित जनसमूह पर आँखें दौड़ाकर देखा, सबकी आँखें झुकी हुई थीं। राजा ने कहा,

'बहन आओ, तुम मेरे साथ चलो, इनमें ऐसा कोई भाई दिखाई नहीं देता, जो तुम्हारा उद्धार कर सके।'

उस स्त्री और राजा की आँखें अब भी दूँढ़ रही हैं, कुछ ऐसे भाई मिलें, जो अपने देश की नारी को अंधविश्वास, रूढ़ीवाद और अत्याचारियों के बंधन से लुड़ा सके। पति और पुत्र बनने के लिए तो वहाँ सब तैयार है परन्तु भाई का भार संभालने के लिए आज एक भी व्यक्ति तैयार नहीं होता।

रक्षाबन्धन का त्योहार ऐसे ही भाइयों की खोज का

त्योहार है। कहने को तो 130 करोड़ की आबादी वाले इस देश में कण-कण में भाई भरे पड़ें हैं पर भीड़ पड़ने पर जो भार हरे, ऐसे कितने हैं?

असुरक्षित केवल नारी ही नहीं है

पिछले आधे कल्प से भाइयों की कलाइयों सजती आई हैं और बहनों की गोद उपहारों से भरती आई है परन्तु असुरक्षा का मँडराता साया जस का तस है। ऐसा नहीं है कि केवल नारी ही असुरक्षित है। अकेली नारी असुरक्षित तब होती है जब उसका अस्तित्व नर से बिल्कुल अलग-थलग होता। समाज रूपी माला में नर और नारी रूपी मणके इस प्रकार गुंथे हैं कि इनको अलग-अलग किया ही नहीं जा सकता। किसी नारी पर जब कोई पुरुष अत्याचार करता है तो एक प्रकार से वह पुरुष को भी घायल करता है। वह पुरुष उस नारी का पिता, पुत्र, पति या भाई कोई भी हो सकता है। और जब कोई नारी किसी पुरुष पर अत्याचार करती है तो एक प्रकार से वह नारी को भी घायल करती है। वह नारी उस पुरुष की माता, बहन, पत्नी या पुत्री कोई भी हो सकती है।

भगवान ने किया था प्रतिज्ञाबद्ध

वर्तमान परिवेश में ऐसा लगता है कि हमें भाई-बहन की दीवार हटाकर, रक्षा सूत्र को आत्मा के स्तर पर ले जाना चाहिए जहाँ एक आत्मा दूसरी आत्मा को धागे से नहीं, एक पीठी प्रतिज्ञा से बाँधे और बाँधे कि मैं तुम्हारे सम्मान की रक्षा करूँगा, तुम मेरे सम्मान की रक्षा करो। इस त्योहार का आदिकालीन रूप ऐसा ही था। जगत के बीजरूप परमात्मा शिव ने स्वयं धरती पर उतरकर आत्माओं को प्रतिज्ञाबद्ध किया था कि एक-दो को आत्मिक रूप में देखो, भाई-भाई को दृष्टि से देखो।

देह अधिगान की दीवार

परमात्मा पिता की यह शिक्षा आधाकल्प चली। सतयुग और त्रेतायुग में मानव ने मानव के साथ प्यार जताया और गाव तथा शेर ने भी एक घाट पर पानी पीया परन्तु

आधाकल्प बीत जाने के बाद द्वापर युग के आगमन पर द्वैत भाव आ गया। नर और नारी में भी शारीरिक बनावट के आधार पर भेद की दीवार खड़ी हो गई जिसे दूसरे शब्दों में हम देह अधिगान की दीवार कह सकते हैं। कलियुग आते-आते भेद की दीवार इतनी मोटी हो गई है, जो इसे साल में एक बार मनाया जाने वाला रक्षाबन्धन का त्योहार तोड़ने में असमर्थ है।

द्वापर युग में हुआ इस प्रथा का आरम्भ

संगीतमय राखी, हीरों की राखी, सोने और चांदी की राखी, सिलमे-सितारों से जगमगाती राखी, नोटों की राखी – ये सब तो राखी के आधुनिक रूप हैं परन्तु प्राचीन काल में, द्वापरयुग में जब इस प्रथा का प्रारम्भ हुआ था तब तो कच्चे सूत के धागे को ही कलाई पर बाँधकर राजा को या आम नागरिक को श्रेष्ठ कर्मों के लिए प्रतिज्ञाबद्ध किया जाता था। भक्तिकाल के प्रारम्भ से मनाए जाने वाले इस त्योहार को साल में, दिन तो तब भी एक ही दिया जाता था परन्तु उस एक दिन में ली गई प्रतिज्ञा वर्ष भर चलती थी। कच्चे धागे की प्रतिज्ञा में इतनी ताकत थी। परन्तु आज चमकती-दमकती राखी को चकाचौंध में खोया मानव इसके पीछे छिपे रहस्य को विस्मृत करने में एक दिन की भी देरी नहीं लगाता। सब तो यह है कि राखी के सच्चे रहस्य से अवगत ही नहीं हो पाता है। तभी तो आज, नर जाति या नारी जाति किसी की भी मान-मर्यादा सुरक्षित नहीं है।

मुझे अपना भाई बना लो

इसमें दोष किसी का भी नहीं है। आत्माएँ सतयुग से कलियुग तक जन्म-पुनर्जन्म की यात्रा करते-करते शक्तिहीन हो गई हैं। जैसे एक कमजोर, दूसरे कमजोर को सहारा नहीं दे सकता, वैसी ही स्थिति सभी आत्माओं की हो चुकी है। अतः सहारेदाता प्रभु को धरती पर आना पड़ता है। वे आकर कहते हैं, इस अन्तिम जन्म में मुझे अपना भाई बना लो। मैं तो अशरीरी हूँ। मुझे स्थूल राखी से नहीं बरन् सच्चे, पवित्र भातृभाव से बाँध लो, मैं बंध जाऊँगा

और तुम्हारे संकल्प मात्र के आह्वान से स्वयं रक्षक बन जाऊँगा या किसी को रक्षा के निमित्त बना दूँगा। आप अपनी रक्षा का भार मुझ पर छोड़ दो और निश्चिंत हो जाओ।

यह सन्धि युग चल रहा है

भगवान शिव निराकार हैं, जन्म-मरण रहित हैं। परन्तु सृष्टि का भार हरने और अशक्तों को शक्ति देने का भार उठाने के लिए उन्हें परकाया प्रवेश की विधि द्वारा धरती पर अवतरित होना पड़ता है। उनके अवतरित होने का समय है पापाचार, दुराचार से भरा कलियुग के अन्त का समय, जो कि अब चल रहा है। परन्तु उनके अवतरित होते ही, इसी कलियुग के बीच एक नए युग का आगाज हो जाता है जिससे संगमयुग या सन्धियुग भी कहते हैं, जिसका अर्थ है जाते हुए कलियुग और आते हुए सतयुग के बीच का युग। वर्तमान समय वही युग चल रहा है।

शत्रु हैं काम, क्रोध, लोभ.....

इस छोटे-से युग में, धरती पर अवतरित भगवान, उन आत्माओं के सम्मुख, जो उन्हें पहचान लेती हैं, प्रतिपल नए-नए चरित्र प्रकट करते हैं। उनमें से ही उनका एक चरित्र है भाई के रूप का। वे संकल्पों, प्रकम्पनों और मधुर महावाक्यों के माध्यम से आत्मा को भाई के प्यार का, बल का, साथ का, सहयोग का, सुरक्षा का अनुभव करा देते हैं। वे असुरक्षित करने वाले शत्रुओं के प्रति भी आत्मा को सावधान कर देते हैं। ये शत्रु हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और इन शत्रुओं के सूक्ष्म अंश तथा इनके बाल-बच्चे जैसे कि ईर्ष्या, नफरत, चुगली, परचिन्तन, आलस्य आदि।

पाँच विकारों को इनकी वंशावली

सहित जीतो

भगवान कहते हैं, कोई भी नर या नारी, किसी के भी शत्रु नहीं हैं। नर या नारी शरीर में मौजूद सभी आत्माएँ मेरे पुत्र हैं, आपस में भाई-भाई हैं, वे एक-दो के शत्रु कैसे हो

सकते हैं? परन्तु ये दुश्मन विकार जब आत्मा में प्रवेश कर जाते हैं तो ये एक आत्मा को, दूसरी आत्मा से लड़वाकर उसका शत्रु बना देते हैं; भाई को भाई के विरोध में खड़ा कर देते हैं। अतः इन पाँचों विकारों को, इनकी वंशावली सहित आप जीतो। इस विषय में मैं तुम्हारा सदा मददगार हूँ। तुम विजय का संकल्प करते हुए एक कदम आगे बढ़ाओ, मैं हजार कदमों से तुम्हारी मदद करूँगा। वास्तव में कलाई पर बंधा धागा इन पाँचों विकारों को जीतने का ही प्रतीक है।

देह को न देख, आत्मा मणि को देखो

अतः रक्षाबन्धन का अर्थ है आत्मा की सर्वांगीण रक्षा (तन, मन, धन, जन, चरित्र, धर्म, मान, पद आदि) के लिए परमपिता परमात्मा शिव की ओर से बांधा गया बन्धन। यह मर्यादा का बन्धन है, सद्गुणों का बन्धन है, शुद्ध दृष्टि, वृत्ति, कृति का बन्धन है। इसीलिए मस्तक पर तिलक लगाया जाता है जो सन्देश देता है कि मिट्टी की देह को न देख, मस्तक पर जगमगाती मणि को देखो और हरेक आत्मा भाई से आत्मिक स्नेह रखो। मुख मीठा कराने के पीछे भाव है कि हरेक आत्मा भाई के प्रति सुकून देने वाले मीठे वचन बोलो। अन्दर की बुराइयों पिता परमात्मा को अर्पित कर देना ही इस त्योहार की सच्ची खर्ची है।

ईश्वरीय कर्तव्य के यादगार रूप में, साल में एक दिन मनाए जाने वाले रक्षाबन्धन की शिक्षाओं को हम प्रतिदिन स्मृति में रखें तो वो दिन दूर नहीं जब सुरक्षा का भार उठाने वाले भाइयों से यह सृष्टि सुसज्जित हो उठेगी। सच तो यह है कि ऐसा सृष्टि में फिर सुरक्षा का कोई भार रहेगा ही नहीं।

ब्र.कु. आत्म प्रकाश

हम जो पढ़ते, सुनते, देखते हैं, वह हमारे चित्त पर बैठ जाता है। जो चित्त पर बैठता है वह चिंतन का हिस्सा बन जाता है। चिंतन हमारे कर्म में आता है और कर्म से भाग्य बन जाता है। ध्यान से पढ़ें, सुनें, देखें, आपका भाग्य बन रहा है

दादी जी की अविस्मरणीय यादें

ब्रह्माकुमार ओम्प्रकाश, मद्रिया, मण्डिला, हरदोई (उ.प्र.)



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी का जीवन हम सभी के लिए आदर्श रूप रहा है। ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद इस बेहद यज्ञ का नेतृत्व दादी जी ने जिस कुशलता के साथ किया, वह हम सभी के लिए अनुकरणीय है। दिव्य गुणों से सम्पन्न दादी जी का व्यक्तित्व असाधारण था। उन्हें देखकर कोई भी व्यक्ति नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सकता था। मुझे भी दादी जी के साथ कुछ पल बिताने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

घर में सात्विकता का माहौल

मेरा जन्म उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले के मद्रिया गाँव में साधारण और सात्विक ब्राह्मण परिवार में हुआ। लौकिक में हम 5 भाई और दो बहनें हैं। सबसे छोटे भाई को छोड़कर हम चारों भाई और दोनों बहनें ईश्वरीय ज्ञान में चल रहे हैं। भक्ति-भावना और पूजा-पाठ में मेरे सबसे बड़े भ्राता कन्हैया लाल जी सबसे आगे थे। मैं कोई पूजा-पाठ नहीं करता था परन्तु बड़े भाई को गीता व रामायण पढ़ते देखकर मन में इन ग्रंथों के प्रति उत्सुकता जरूर जाग्रत होती थी। चारों भाइयों में मेरा चौथा नम्बर है। मुझसे बड़े भ्राता प्यारे लाल जी महमूदाबाद (सीतापुर) सेवाकेन्द्र पर समर्पित हैं।

घर बैठे भगवान मिले

मुझे ईश्वरीय ज्ञान घर बैठे सन् 1988 में मिला। मैं और मेरे बड़े भ्राता अपने दरवाजे पर बैठे हुए थे, तभी एक श्वेत वस्त्रधारी व्यक्ति मेरे घर के बगल में रहने वालों से मिलने आया। कुछ देर रुकने के बाद जब वह व्यक्ति वापस जाने के लिए उठा, ठीक उसी समय मुझसे बड़े भ्राता प्यारे लाल जी पानों भरने के लिए खाली बाल्टी लेकर घर से निकल पड़े। उस समय पानों कुओं से भरकर घर ले जाया जाता

था। बड़े भाई साहब उस श्वेत वस्त्रधारी भाई से बोले, भाई साहब, थोड़ा रुक जाइये। बाल्टी भरकर आ जाये तब चले जाना। कलियुगी रीति-रिवाज के अनुसार, कहीं जाने को तैयार व्यक्ति के सामने यदि कोई खाली बाल्टी लेकर आ जाये तो उसे अशुभ माना जाता है। वह श्वेत वस्त्रधारी भाई जी तपाक से बोले, मैं यह कुछ नहीं मानता हूँ क्योंकि मेरा भगवान से सौभा सम्बन्ध है। उनकी इस बात से भाई साहब और श्वेत वस्त्रधारी भाई में बहस छिड़ गई और यह बहस करीब एक घंटे चली। मेरे बड़े भाई जी गीता, रामायण के आधार पर बोलते थे और वह श्वेत वस्त्रधारी भाई ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर। आखिर हम लोगों को हार माननी पड़ी और वह श्वेत वस्त्रधारी भाई गीता पाठशाला पर आने का निमंत्रण देकर चला गया।

दूसरे दिन हम लोग गीता पाठशाला पहुँचे और उस भाई ने गीता पाठशाला में लगे चित्रों पर समझाना शुरू किया। एक के बाद एक-एक करके वे चित्रों पर समझाते गये और हम लोगों ने पूरी प्रदर्शनी ध्यान देकर समझी और वापस घर आ गये। साप्ताहिक कोर्स करने के बाद ईश्वरीय ज्ञान पूरी तरह से बुद्धि में बैठ गया। अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होने के साथ-साथ हम लोग सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि हो गये।

मधुवन पहुँचने का सौभाग्य

सन् 1990 के जनवरी मास में मुझे मधुवन पहुँचने का सुअवसर मिला। हमारी रहने की व्यवस्था पाण्डव भवन में हुई। शाम को 5 बजे दादी जी से मिलने के लिए हम मेडिटेशन हाल में पहुँचे। हमारे अतिरिक्त अन्य सेवाकेन्द्रों से आये हुए भाई-बहनें भी दादी जी से मिलने के लिए वहाँ बैठे थे। उस समय बाबा मिलन के दिन भाई-बहनों की संख्या ज्यादा से ज्यादा पाँच हजार तक ही पहुँच पाती थी। मुरली क्लास व बाबा मिलन का कार्यक्रम ओमशान्ति भवन

में होता था। दादी जी पार्टी में आने वाले प्रत्येक भाई-बहन से मिलती थीं।

दादी जी से प्रथम मिलन

आखिर में हम लोगों को इन्तजार की घड़ियाँ समाप्त हुईं। दादी जी ने मेडिटेशन हॉल में प्रवेश किया। उन पर नजर पड़ते ही मैं तो अवाक रह गया। ऐसा दिव्य व अलौकिक चेहरा मैंने जीवन में पहली बार देखा था। हॉल में प्रवेश होने के बाद दादी जी ने एक जगह पर खड़े होकर, बैठे हुए सभी बहनों व भाइयों पर नजर डाली और अपनी ओजस्वी वाणी में बोली, 'अतीन्द्रिय सुख पूछना ही तो गोपीवल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो।' इसके बाद सामने लगे सोफे पर बैठ कर सभी उपस्थित भाई-बहनों से मिलने लगी। मेरी भी बारी आयी और मैं दादी जी के बिलकुल पास पहुँच गया। दादी जी की दृष्टि मिलते ही एहसास हुआ कि मैं जमीन पर नहीं बल्कि हवा में उड़ रहा हूँ। दादी जी से मिलन का यह मेरा पहला अनुभव था।

प्रत्येक को देती थी स्नेह भरी दृष्टि

इस ईश्वरोप्य विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका होने के नाते दादी जी मधुवन आने-जाने वाली पार्टियों का पूरा ध्यान रखती थी। क्लास के समय दादी जी हॉल में उपस्थित सभी भाई-बहनों से 'रहने का स्थान ठीक-ठाक मिला?' अक्सर यह पूछा करती थी। दादी जी के ऐसा पूछने पर हाल में उपस्थित सभी भाई-बहनों हाथ हिलाकर दादी जी को जवाब देते थे जिससे दादी जी निश्चिन्त हो जाती थी। जाने वाली पार्टियों को जाने के एक दिन पहले सौगात देने का कार्यक्रम भी ओमशान्ति भवन में रखा जाता था और सौगात लेकर सामने से गुजरने वाले प्रत्येक भाई-बहन को दादी जी स्नेह भरी दृष्टि देकर विदा करती थी।

मधुवन में सेवा का सुनहरा अवसर

सन् 1991 में मुझे पाण्डव भवन में सेवा करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। एक बार मैं पाण्डव भवन में कपड़ों के गट्टर को अकेले ही उठाने की कोशिश कर रहा था। गट्टर भारी था इसलिए बार-बार प्रयास करने पर भी वह मुझसे उठ नहीं रहा था। मुझसे कुछ ही दूरी पर खड़ी हुई दादी जी यह देख रही थी। उन्होंने तुरन्त एक भाई से कहा कि इस भाई को सहारा दो और यह कहते हुए स्वयं गट्टर को हाथ लगाने के लिए आगे बढ़ी। तब तक वह भाई मेरे पास पहुँच चुका था। कितनी निरहंकारिता थी दादी जी में! इतने बड़े विश्व विद्यालय की प्रशासिका होने के बावजूद भी दादी जी में



अहंकार नाममात्र भी नहीं था। आज की दुनिया में एक छोटे-से पद पर आसीन व्यक्ति भी रोब और अहंकार से बात करता है। दादी जी का ऐसा निरहंकारी जीवन देखने का मुझे परम सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

दादी जी की दृष्टि में आत्मिक भाव था

दादी जी सभी को आत्मिक भाव से देखती थीं। उनको दृष्टि में न कोई छोटा था, न कोई बड़ा। न

कोई ऊँच और न कोई तोच। वह सभी को समान दृष्टि से देखती थी चाहे वह मधुवन निवासी हो या किसी सेवाकेन्द्र की इन्वार्ड। वह साधारण से साधारण ब्रह्माकुमार को भी बहुत ऊँची दृष्टि से देखती थीं। मुझे याद है कि एक बार ओमशान्ति भवन से क्लास छूटने के बाद मैं पाण्डव भवन के प्राण में आकर एक कोने में खड़ा हो गया। मुझसे कुछ दूरी पर ही एक विकलांग भाई कील चेयर पर बैठा था। क्लास छूटने के बाद सभी भाई-बहनों पाण्डव भवन में प्रवेश कर रहे थे। बड़ा ही मनमोहक दृश्य था। कुछ ही क्षणों में दादी प्रकाशमणि जी ने भी पाण्डव भवन में प्रवेश किया। दादी जी

के हाथ में सुन्दर गुलाब का फूल था। पाण्डव भवन में प्रवेश करते ही दादी जो की दृष्टि व्हील चेयर पर बैठे उस भाई पर पड़ी। दादी जी आकर सीधे उनके पास रुक गई और स्नेह भरी दृष्टि देते हुए गुलाब का फूल उनको थमा दिया। फिर दृष्टि देकर, मुस्कराते हुए हाथ मिलाकर आगे बढ़ गई। यह कैसा दिव्य-अलौकिक तजारा था। कितना स्नेह व असीम प्यार था दादी जी में। आत्मिक स्नेह और रूहानियत से भरा दादी जी का चेहरा कितना आकर्षक था!

कुमारों की कुमारका दादी

एक बार कुमारों की भट्टी में मुझे मधुवन जाने का चान्स मिला। कुमारों का विशेष क्लास दादी जी को कराना था। दादी जी ने हॉल में पहुँचते ही अपनी ओजस्वी वाणी में कहा कि कुमार सो ब्रह्माकुमार सो तपस्वी कुमार सो राजर्षि कुमार। ऐसा कहते हुए दादी जी ने हाथ हिलाते हुए सभी कुमारों का स्वागत किया।

दादी जी के दिल में कुमारों के प्रति असीम प्यार था। दादी जी जब कुमारों का क्लास लेती थी तो कहा करती थी, मेरा एक-एक कुमार भाई महावीर है। एक-एक कुमार भाई अपने चेहरे और चलन से बाबा का नाम रोशन करने वाला है। उस दिन क्लास में दादी जी ने सभी कुमारों को रूहानी जोश और उमंग-उत्साह से भर दिया। क्लास छूटने के बाद दादी जी ने हम सभी कुमारों को एक-एक चाँदी की अंगूठी दी जिस पर शिवबाबा का चित्र अंकित था।

अंगूठी लेते समय मुझे रामायण में वर्णित उस घटना की याद आ गई जब रावण सीता जी को हरण करके लंका ले गया था। हनुमान जी, सीता जी का पता लगाते-लगाते उनके पास पहुँचे और जब राम की दी हुई अंगूठी सीता जी को भेंट की तो सीता जी को भरोसा हो गया कि मेरे राम आ चुके हैं और लंका पर चढ़ाई करके, रावण को मारकर मुझे अपने साथ वापस जरूर ले जायेंगे। हम सभी जानते हैं कि वेदों, शास्त्रों, पुराणों व रामायण में

वर्णित कथाएँ इस संगमयुग की ही यादगारें हैं। मानो दादी जी (महावीर) मुझे आत्मा रूपी सीता से कह रही हों कि यबराना नहीं। शिवबाबा (राम) आ चुके हैं। वे जल्द ही रावण को मारकर सभी (आत्मा रूपी सीताओं) को अपने साथ ले जायेंगे। तो ऐसी महान, कर्मठ, त्यागी, तपस्वी दादी जी को उनको 12वीं पुण्यतिथि पर कोटि-कोटि अभिनन्दन व प्रणाम करता हूँ। ❖

कतल कवे

ब.कु. निर्विकार नराचन श्रीवास्तव, सिद्धिख तीर्थ (उ.प्र.)

**नहीं विकार में जाना तुमको, चाहे कोई कतल करे।
देहभान में लाकर माया, क्यों ना कैसी नकल करे।।**

संगम पर यदि कतल हुआ, 21 जन्म तक रोओगे।
सुख-शान्ति सब छिन जायेंगे, अपना पद भी खाओगे।
दिव्य गुणों से सम्पूर्ण थे, अब रावण भी शकल धरे।
नहीं विकार में जाना तुमको, चाहे कोई कतल करे।

माया रूप भयंकर रचकर, सबको नाच नचाती है।
रुस्तम होकर युद्ध है करती, महारथी को मिराती है।
बुद्धि भ्रष्ट हो गई सभी की, काम न कोई अकल करे।
नहीं विकार में जाना तुमको, चाहे कोई कतल करे।।

परमपिता संगम पर आकर, राजयोग सिखलाते हैं।
सतयुग को राजाई खातिर, सबको विधि बताते हैं।
याद करे और चक्र चलाए, मुरली पर भी अमल करे।
नहीं विकार में जाना तुमको, चाहे कोई कतल करे।।

निश्चयबुद्धि बन करके अब तुम्हें पढ़ाई पढ़नी है।
घर-गृहस्थ में रह करके, अब कठिन तपस्या करनी है।
पवित्रता है कायम रखनी, माया जितना भी दखल करे।
नहीं विकार में जाना तुमको, चाहे कोई कतल करे।।

परमपिता ब्रह्मा के द्वारा, स्वर्गिक दुनिया रचा रहे।
मीठे बच्चे कह करके वो राजयोग है सिखा रहे।
श्रीमत पर जो चलेगा पक्का, वह राज सतयुगी अटल करे।
**नहीं विकार में जाना तुमको, चाहे कोई कतल करे।
देहभान में लाकर माया, क्यों ना कैसी नकल करे।।**

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवालों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

- सम्पादक

प्रश्न- संस्कार कैसे निर्मित होते हैं?

उत्तर- अभी दिल से, बुद्धि से, नयनों से जो करेंगे वो हमारे संस्कार बन जायेंगे। सतयुग में हमारे संस्कार कैसे होंगे वो इमर्ज करो। सतयुग में क्या करेंगे? जैसे गीत में सुना कि परमधाम में जाना है, फिर वैकुण्ठ में आना है। वहाँ तो सब बना बनाया मिलेगा, हमको कोई बनाना नहीं पड़ता है। बने बनाये पर हम आयेंगे, राजाई करेंगे खुशी से। राज्य करने की खुशी अभी से है, तो कितना नशा है! बाबा तो बहुत अच्छा है, कल्प के बाद फिर मिलेगा। बाबा सतयुग में कहीं होगा, परमधाम में बैठा रहेगा। अभी साकार बाबा के द्वारा हमको पहाया है। इस बाबा ने अपनी तो बहुत अच्छी कमाई की, हमको भी लायक बनाया।

हमने साकार बाबा की माइक में बोली हुई आवाज कभी नहीं सुनी है। इन कानों ने डायरेक्ट बाबा के महावाक्य सुने हैं, डायरेक्ट इन आँखों से देखा है। लेकिन अभी जैसा समय, वैसी बात। जब से बाबा के बने हैं, बाबा को आज्ञाओं को पालन करने के लिये मन ने अच्छा साथ दिया है। एक बाबा के अलावा मुझे तो कोई याद नहीं आता है। तन से यहाँ बैठे हैं या कहीं भी हैं, पर मेरा मन बाबा के साथ है। ऐसे नहीं, शान्तिवन से बाहर निकलें तो कुछ और करें, ना ना। मनजीते जगतजीत, ये बाबा के पुराने शब्द हैं।

प्रश्न- हेल्दी, वेल्दी, हैप्पी रहने का अर्थ क्या है?

उत्तर- बाबा ने मुझे कुंज भवन में नटखट बच्चों को सम्भालने की सेवा के निमित्त बनाया था। बाबा-मम्मा का

अलग-अलग भवन था। बाबा रोज़ मुझे फोन द्वारा कुंज भवन के सब बच्चों का हालचाल पूछते रहते थे, कभी खुद भी सभी को मिल करके जाते थे। कभी किसी बच्चे का हाल सुन कर, देख कर बाबा उस बच्चे को बीमारी को दूर करने के लिये दवाई भी बताते थे। कई प्रकार से पेशेन्ट की सेवा करने से मेरा भाग्य बढ़ता गया। इसी बहाने बाबा से फोन पर रोज़ डायरेक्ट बात हो जाती थी। यह मेरा भाग्य था। करावी में एक बार भी बाहर के किसी डॉक्टर को नहीं बुलाया क्योंकि बाबा टच करते थे, सभी को क्या खिलाऊँ, क्या पहनाऊँ! बाबा ने ऐसी सेवा करनी सिखायी। बाबा इशारा करते थे, तुम्हारा काम है ध्यान रखना क्योंकि यह भी यज्ञसेवा है, बाबा के बच्चे हैं। फलस्वरूप बाबा के सभी बच्चे सदा हेल्दी, वेल्दी, हैप्पी रहे। हेल्दी माना माया को व्याधि से मुक्त। वेल्दी माना पैसे में धनवान नहीं बल्कि इस जीवन में अविनाशी ज्ञान धन ऐसा मिला है जो सदा साथ है। हैप्पी रहने से दिल खुश, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल रहता है। वही सबके लिये दवा भी है तो दुआ भी है। इसी से सबके चेहरे चमकेंगे। धीरज, शान्ति, प्रेम – ये तीनों बातें हर एक के पास हों तो बहुत दुआयें मिलती हैं।

प्रश्न- हय किसी से भी मिलें तो उसको हमारे द्वारा क्या अनुभूति हो?

उत्तर- बाबा की सूरत ऐसे खींचती है जो व्यर्थ तो क्या पर साधारण संकल्प भी नहीं आता है। सतयुगी राजाई में भी इतना मजा नहीं होगा, जितना अभी राजयोग में आनंद

स्वरूप हो गये हैं। सत्-चित्त-आनन्द स्वरूप का क्या अर्थ है? सच्चाई है तो चित्त साफ है। आनन्द में खुशी है, शक्ति है। राजयोग की राजाई बन्दरफूल है। अभिमान नहीं है पर मेरे जैसा कोई नहीं, थोड़ा नशा एक्स्ट्रा है... माफ करना। सब एक कै है, एक हैं, यही स्मृति-वृत्ति-दृष्टि कितनी ऊँची है! अनासक्त और नष्टोमोहा वृत्ति धारण कराके बाबा ने सदा के लिये मुस्कराना सिखा दिया। राजयोग की गहराई में जाओ तो प्राप्ति बहुत है। यहाँ जो हमारी यूनिटों है, बहुत अच्छी है! यूनिटों से बहुत फायदा है। हर समय बाबा की अच्छी-अच्छी बातें याद आ जाती हैं। बाबा ने इतना बड़ा यज्ञ रचा और हम सबको बेफिक्र बादशाह बना दिया। किसी से भी मिलो तो वह यह अनुभव करे कि जैसे बाबा की दृष्टि महासुखकारी है, ऐसे हमारी भी दृष्टि सुखकारी है। भले भाषा न भी आती हो। यह हमारा अलौकिक जन्म है। अभी हम तीन ब्राप के बच्चे हैं। सतयुग में भी ऐसा जन्म नहीं होगा।

प्रश्न- दादी जी, एकमत होकर रहने का आधार क्या है?

उत्तर- मनमत न हो इसके लिए सदा श्रीमत पर चलते रहें तो हमेशा एकमत हो चल सकेंगे। सारे कल्प में अभी ही ऐसा मौका मिला है, जो सभी आपस में एकमत होकर रहते हैं और अपनी-अपनी कमाई जमा करते हैं। हमारी इस पढ़ाई में बहुत कमाई जमा हो रही है। सतयुग में आने की तैयारी भी यहाँ करना है क्योंकि जब यह पढ़ाई पूरी हो जायेगी तो हम सभी आत्मायें वापस घर जायेंगी। फिर वापस सतयुग में आयेगी। अव्यक्त होकर भी बाबा, आज दिन तक कैसे पालना दे रहा है और हम बच्चे उसी अव्यक्त पालना से अपनी स्थिति को अच्छे से अच्छा बना रहे हैं। बहुत इज़ी राजयोग है लेकिन ऐसे भी नहीं कि सहज कहके अलबेले हो जाए। नहीं। अलबेलेपन का अंश न हो, नहीं तो कमाई से वंचित रहेंगे। इसके लिए साक्ष्य होकर देखो। जैसे अभी हम एक-दो को स्नेह की दृष्टि से देखते, मिलन मना रहे हैं ऐसे सतयुग में थोड़े ही होगा! यहाँ बैठे बुद्धि बाबा के साथ

है। जहाँ बाबा, वहाँ बच्चे।

प्रश्न- आपके दिल में क्या है, भावना में क्या है?

उत्तर- अभी दिल की बात यह है कि कभी भी व्यर्थ ख्यालात नहीं आते हैं, मेरे को तो नहीं आते, पर किसको भी न आये, यह भावना है क्योंकि सारे ही मेरे बहन-भाई हैं। कोई-कोई बहुत अच्छे-अच्छे भाई-बहनें आते हैं। जब हम उन्हें मिलते हैं तो बहुत खुशी होती है। संगमयुग में जो हमारा आपस में सम्बन्ध है ना, बड़ा सच्चा और सुखदाई है। दिल से पूछकर देखो, दिल पर हाथ लगाकर देखो, पाँच हजार साल में यह जो समय है, बड़ा सुखकारी है। यज्ञसेवा से कइयों का बहुत प्यार है क्योंकि भगवान ने यज्ञ रचा है, जहाँ हम समर्पण हुए हैं। कई आत्माओं ने यज्ञसेवा से अपनी बहुत अच्छी स्थिति बनाई है। कोई-कोई पुराने मिलते हैं तो उन्हें देख मुझे याद आता है कि इन्होंने दिल से सेवा की है। बाबा ने ही सबसे पहले दिलखुश मिठाई खिलाने का सिस्टम बनाया था। दिलखुश मिठाई खिलाओ, जाँ चेहरा खिल जाए। इस तरह की टौली खिलाने से भी बहुत खुशी होती है। सिर्फ हाथ से टौली नहीं देते पर स्नेह और सच्चाई की दृष्टि भी देते हैं। खाओ टौली, सुनो बोली, बनो होली। इस प्रकार से संगम का हनारा यह मिलन बहुत ही मूल्यवान है।

प्रश्न- वायुमण्डल स्नेह से भरपूर हो, इसके लिए क्या करें?

उत्तर- स्व की भावना – सबके लिये चाहे अपने लिये, न्यारी और प्यारी हो। सारे दिन में सबके गुण देखने से वायुमण्डल स्नेह से भरपूर हो जाता है। प्रेम तो बाबा के लिये और सारे ईश्वरोप परिवार के लिये है ही। मैं तो कहेंगी, बाबा समान बनना हो तो रूहानी स्नेह की गहराई में जा करके शान्ति से काम लो। सेवा कितनी चल रही है, सेवा वृद्धि को पा रही है परन्तु हरक अपने आपको चेक करें और ईर्ष्या, द्वेष, यह ऐसी है, यह वैसी है... यह सब खत्म करें। शुभचिंतन में रहना, सबके लिये शुभचिंतक बनना, यह बहुत सुखदाई है। मुझे कुछ चाहिए नहीं। ❀

अपने संकल्प के रचयिता हम स्वयं हैं

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)



जब हम खुशी की बात करते हैं तो ऐसा लगता है कि खुशी शायद होठों तक ही सीमित है। जब मैं बच्चों के साथ होती हूँ तब खिलखिलाहट होती है, खुशी वही तक सीमित है लेकिन वो केवल खिलखिलाहट है, खुशी

नहीं है। खुशी अदर की चीज है। अदर की वो अनुभूति है जिसे मैं खुद निर्मित करती हूँ। उसे रचने के लिए मुझे अपने संकल्पों पर ध्यान देना पड़ता है।

परिस्थितियाँ आती हैं, लोग अच्छा-बुरा व्यवहार करते हैं, तो कहीं न कहीं हमारा जीवन, हमारे नियंत्रण से बाहर चला जाता है। तब ये सोच चलनी शुरू होती है कि आखिर इस तरह से जीवन कब तक चलेगा! फिर हम खुशी के विपरीत वाली अनुभूति, चाहे वो चिंता की है, भय की है, उसे स्वीकार करना शुरू कर देते हैं क्योंकि परिस्थिति पर सोच निर्भर करती है और परिस्थिति सदा हमारा साथ देने वाली नहीं है। रिश्तों में हमेशा हर चीज मेरे अनुसार चले, ये होने वाला नहीं है। लोग मेरी आशाओं को हमेशा पूरा करते रहें, ये होने वाला नहीं है। जैसा मैं सोचूँ, आप वैसा व्यवहार करें, ये होने वाला नहीं है। हमारी खुशी आपके व्यवहार पर निर्भर है, यह हमारे लिए बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न है। तब हमने महसूस किया कि परिस्थिति तो बाहर से आती है, संकल्प हम पैदा करते हैं। अगर हम अपने आपको देखना शुरू करें और स्वयं को बदलना शुरू करें तो हो सकता है कि उसी परिस्थिति में हम अपने आपको थोड़ा-सा अच्छा अनुभव कर सकते हैं।

सोच से संवेदना, संवेदना से कार्य, कार्य से आदत बनती है। अब यहाँ पर प्रश्न उठता है कि गुस्सा हमारी

आदत क्यों बन रही है? क्योंकि हमने कहीं भी रुक कर अपने संकल्प को जाँचा नहीं और उसे बदला नहीं। आप अपनी डायरी में यह लिखकर रख दें कि 10 मिनट सुबह का समय और 10 मिनट शाम का समय हम अपने साथ व्यतीत करेंगे। इससे आपका बहुत सारा कार्य हल्का हो जायेगा। नहीं तो आप साधारण तरीके से ही चलते रहेंगे। यदि हम आज की दिनचर्या को अपने मन में दुहराते भी हैं तो उसमें भी हम परिस्थिति और दूसरे लोगों को ही ज्यादा देखते हैं, जो कि मेरे वश में नहीं है। मुझे सिर्फ यह देखना है कि उस परिस्थिति में मैं किस प्रकार से व्यवहार कर सकती थी, मैं क्यों दुखी हुई? यहाँ पर मैंने गुस्सा कर दिया, मैं गुस्सा नहीं भी करती तो भी काम चल सकता था। कार्यान्वयन करने के लिए हमें यह ध्यान रखना पड़ता है कि हमें परिस्थिति के बारे में चिंतन नहीं करना है कि औरों ने क्या बोला या क्या किया, मैंने क्या ग्रहण किया और मैं क्या ग्रहण कर सकती थी, हमें ये देखना है।

यदि हम ऐसा नहीं करते हैं तो हम दुख की अनुभूति करते-करते सो जायेंगे और जब हम अगली सुबह उठेंगे तो फिर वही दर्द उत्पन्न होने लगेगा। फिर जब हम उसी व्यक्ति से दुबारा मिलेंगे तो वही दर्द उस व्यक्ति के प्रति पुनः उत्पन्न हो जायेगा। दर्द से मुक्ति के लिए अपने आपसे इस प्रकार बातें करें –

परिस्थितियों से और लोगों से अपने आपको हटाते हुए, अपने मन को देखते हैं... सारे दिन में मेरी क्या सोच चलती है... प्रत्येक संकल्प को मैं निर्मित कर रही हूँ... और अब मैं समझ गई... कि ये मेरी रचना है... आज दिन तक... जो दर्द... जो धोखा... जो तकलीफ मैंने पकड़कर रखी थी... जो मैंने ही पकड़कर रखी थी... दर्द में रहना मैंने ही खुद चुना था... आज... मैं अपने आपको... उस दर्द

से... मुवत करती हूँ... शुद्ध संकल्प रचकर... मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ... और कोई नहीं... कोई भी शक्ति मुझे

हताश नहीं कर सकती... शांत रहना... यह मेरा स्वभाव है... शान्ति मेरी शक्ति है... यह मेरी रचना है... ❖

बाबा की कुटिया में घटित चमत्कार

ब्रह्माकुमार सत्यभान सारस्वत, वरिष्ठ वैज्ञानिक, देहरादून

सत्यकथा है, लगभग चार वर्ष पुरानी, जब मैं विज्ञान गोष्ठी में भाग लेने मधुवन गया था। इस अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन ब्रह्माकुमारीज की आध्यात्मिक विज्ञान शाखा (स्वाके) द्वारा ज्ञानसरोवर में किया गया था। मेरे उहरन की व्यवस्था साण्डव भवन के 'अतिथि कक्ष' में थी।

सितम्बर का नवरात्र का महीना था। अगले प्रातःकाल जब हमें ज्ञानसरोवर जाना था तो तेज वर्षा के कारण रफट पर मेरा पैर फिसल गया और मौच आ जाने के कारण मैं दर्द से कराहता हुआ सड़क पर गिर गया। मुझे पिछले दस-बारह वर्षों से घुटने का दर्द हो रहा था। मेरे साथी भाई ने मुझे सहारा देकर उठाया किन्तु दर्द इतना पीड़ादायक था कि चलना सम्भव नहीं हो पा रहा था।

आगे जो बताने जा रहा हूँ उससे पहले अपना परिचय देना चाहूँगा कि मैं व्यवसाय से वैज्ञानिक हूँ। लगभग 33 वर्षों भारत सरकार के विभिन्न वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों में, विभिन्न राज्यों में सेवा की है। इस पृष्ठभूमि के कारण मेरा नैम, इकोम और देवी-देवताओं की पूजा से इलाज में विश्वास कभी नहीं रहा और न रहेगा। किन्तु अग्रघटित सत्यकथा ने मेरे विचारों में भावनात्मक परिवर्तन कर दिया और अध्यात्म में विश्वास बढा दिया।

उस समय, जब मैं अग्रद्वितीय दर्द से पीड़ित था तब अपने सहयोगी से निराश भाव से कह रहा था कि अब दर्द सहा नहीं जा रहा है। मैं अपने बेटे को फोन करके बुलाता हूँ, वही मुझे यहाँ से किसी बड़े हॉस्पिटल में ले जाय, रायट पैर में फ्रैक्चर हो गया है। सहयोगी भाई ने कहा कि

बेटे को फोन करने से पहले एक प्रयास करते हैं। धरों, बाबा की कुटिया में चलते हैं। चिन्ता को बाले नहीं हैं। यहाँ ब्रह्माकुमारीज का अपना बड़ा चिकित्सालय है। वहाँ सभी सुविधाएँ हैं। विशेषज्ञ डॉक्टर भी हैं।

साहस जुटाकर, अपने सहयोगी का सहारा लेकर मैं बाबा की कुटिया में पहुँचा जिध मैं पहले कभी नहीं देखा था। बाबा की कुटिया, प्रकृति की गोश में बनी बड़ी सुन्दर झोपड़ी (काटेज) जैसी है। वहाँ योगियों के बैठने के लिए प्रबन्ध भी है। यथास्थान हम बाबा का ध्यान करने लगे। धीरे-धीरे पैर उठने लगा अर्थात् फ्रैक्चर का सदेह समाप्त हो गया और जब मैंने दोनों पैरों की कमरत की तो देखा कि सामान्य जैसे हो रहे हैं। पीड़ा कम हो गई। पुनः साहस कर मैंने बाबा की कुटिया का परिक्रमा धन्यवाद भाव से की। पीड़ा जा चुकी थी। यह बाबा की कृपा का अतिसत चमत्कार था। ये सत्य वचन लिखते समय आज भी मुझे आश्चर्य हो रहा है किन्तु परममन्य की अनुभूति भी हो रही है।

मैं बाबा की अनुकम्पा से अति आनंदित हो रहा था। ज्ञानसरोवर पहुँच कर मैंने अपने दर्द से पहुँचने की पूरी कहानी, गोष्ठी की संयोजिका बहन अश्विका को सुनाई जिससे मेरा पूर्व परिचय, मेरे कर्नाटक के सेवाकाल की पृष्ठभूमि से था। वे बोली, आपके उहरन की व्यवस्था यहीं ज्ञान सरोवर में कर देती हूँ। मैंने उनको धन्यवाद दत्त हुए कहा, यह तो मेरा सौभाग्य रहेगा कि मैं रात्रि समय बाबा के निकट बिताऊँ और बाबा का सदैव स्मरण करता रहूँ। ❖

सच्चा दोस्त कौन?

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन (आबू रोड)

खून के रिश्ते मनुष्य को जन्म से ही मिलते हैं। आयु की वृद्धि के साथ इन रिश्तों में भी चाहे-अनचाहे वृद्धि होती रहती है। परन्तु एक रिश्ता ऐसा है जिसका खून से कोई लेना-देना नहीं है पर यह खून से भी ज्यादा करीब है और यह रिश्ता है सखा, दोस्त, मित्र का रिश्ता। यह जन्म के साथ आरम्भ नहीं होता परन्तु मरते-दम तक हमें बाँधे रखता है। किसी आकर्षण में बंधकर हम कब, किसके, कितना नजदीक चले गए, यह शायद हम भी बता न सकें पर मन कहता है, उसके साथ सुकून मिलता है। माँ की शीतल गोद से निकलने के बाद पहला-पहला मेरापन इसी दोस्त के साथ जुड़ता है। यह सहपाठी भी हो सकता है और सह-वासी भी।

तू चिन्ता मत कर, मैं हूँ ना खेल-कूद का भागीदार दोस्त से अच्छा और कौन हो सकता है? बड़ों को ना तो फुर्सत है, ना शरीर में वो लचोलापन। खेल का भागीदार धीरे-धीरे दिल की भावनाओं का भी भागीदार बन जाता है। जो भाव कहीं ना बाँटा जा सके उसे दोस्त से बाँटना सरल है। यह दोस्त ही है जो प्यार से हाथ पकड़कर कहता है, तू चिन्ता मत कर, मैं हूँ ना। मेरे होते चिन्ता कैसी? अरे तू एक बार मुस्कराकर दिखा दे, बाकी सब मेरे पर छोड़ दे।

भगवान की दोस्ती सीमाओं से परे

मानव की मानव से दोस्ती से इतिहास भरा पड़ा है। अकबर-बीरबल की दोस्ती, राणाप्रताप और भामाशाह

की दोस्ती - इन दोस्तों ने जरूरत पड़ने पर सबकुछ न्योछावर कर दिया था। मानव से भगवान की दोस्ती की कहानियाँ भी कम नहीं हैं। भगवान को हमने कहा, त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव' अर्थात् माता-पिता, भाई होने के साथ-साथ सच्चा सखा भी भगवान है। यादगार शास्त्रों में भगवान के सखा रूप के तीन



सुप्रसिद्ध प्रसंग हैं -

1. श्रीकृष्ण-सुदामा 2. श्रीराम-सुग्रीव 3. श्रीकृष्ण-अर्जुन। इन तीनों में से एक निर्धन ब्राह्मण है, दूसरा वनवासी है और तीसरा राजकुमार है। भावार्थ है कि भगवान की दोस्ती किन्हीं सीमाओं में बंधी हुई नहीं है। वे सबकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं। श्रीमद्भगवद् गीता में भगवान ने कहा है, 'मैं सभी का सुहृद् हूँ।'

'मानस' में मित्रता

रामचरित मानस के किष्किन्धा

कांड में राम और सुग्रीव की मित्रता का वर्णन है। सुग्रीव, श्रीराम से कहते हैं, पहले मैं आपकी भार्या को छुड़ाने में सहायता करूँगा, फिर आप मेरी भार्या को छुड़ाने में सहायता करें। इस पर श्रीराम मित्रता का आदर्श प्रस्तुत करते हुए कहते हैं, आप मेरी भार्या को छुड़ाने में सहायता करें, फिर मैं आपको आपकी भार्या और राज्य दिलाऊँ, यह तो किसी चतुर व्यापारी का कर्म है। राजनीति के नियम स्वार्थ पर आधारित हैं। मेरी प्रकृति में स्वार्थ का नाम नहीं है। मैं तो सुग्रीव से ऐसा नाता जोड़ना चाहता हूँ जिसमें कोई

शर्त नहीं, लेन-देन नहीं, गिनती नहीं, स्वार्थ की सीमा से परे का नाता, इसमें एक ही वस्तु का आदान-प्रदान होगा और वह है प्रेम। सन्धी राजाओं में होती है पर मित्रता तो राजा और रंक में भी हो सकती है। मित्र यह नहीं देखता कि सामने वाले के पास धन है या नहीं, वह शक्तिशाली है या नहीं, मित्रता अति प्रिय वस्तु है। मित्र, मित्र के लिए प्राण भी न्योछावर कर सकता है। तुलसीदास जी ने 'मानस' में मित्रता के गुणों का सुन्दर वर्णन इस प्रकार किया है -

जे न मित्र दुख होहि दुखारी।

तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥

निज दुख गिरि सम रज करि जाना।

मित्रक दुख रज मेरु समाना॥

कुपथ निवारि सुपंथ चलावा।

गुन प्रगटे अवगुनन्हि दुरावा॥

विपत्तिकाल कर सतगुन नेहा।

श्रुति कह संत मित्रगुन एहा॥

आगे कह मृदु वचन बनाई।

पाछें अनहित मन कुटिलाई॥

जा कर चित अहि गति सम भाई।

अस कुमित्र परिहरेहि भलाई॥

भावार्थ यह है कि जो अपने मित्र को विपदा में देख द्रवित नहीं होता, ऐसे मानव को देखने भर से ही भारी प्रप लगता है। सच्चा मित्र अपने पहाड़ सम दुख को धूल समान समझता है और मित्र के धूल समान दुख को पहाड़ समान समझता है। सच्चा मित्र बुरे रास्ते से हटाकर श्रेष्ठ मार्ग की ओर ले चलता है। वह मित्र के गुणों का बखान करता है और अवगुणों को छिपा लेता है। विपत्ति आने पर वह अपने मित्र से सौगुणा अधिक प्रेम करता है। इसके विपरीत, जो सामने मीठा बोलता है और पीठ पीछे बुराई करता है, मन में कपट रखता है, जिसके मन की गति साँप की तरह विषैली है, ऐसे मित्र का त्यागने में ही भलाई है।

बालू और पत्थर

एक बार दो मित्र घूमने निकले। एक आयु में थोड़ा बड़ा

था, दूसरा छोटा था। सफर के दौरान दोनों में किसी विषय पर बहस हो गई। इस पर बड़े को क्रोध आ गया। उसने छोटे वाले के गाल पर थप्पड़ मार दिया। छोटा कुछ बोला नहीं परन्तु रास्ते में एक ऊँचे रेतिले टीले को देखकर उस तरफ गया और बालू पर लिख दिया, 'आज मेरे मित्र ने क्रोध में मुझे थप्पड़ मारा।' इसके बाद दोनों फिर चलने लगे। चलते-चलते पसीना आया, गर्मी लगने लगी तो नहाने के लिए एक तालाब में उतर गए। तालाब में काई जमी थी। छोटे का पाँव फिसल गया और वह डूबने लगा। तभी बड़े वाले ने झट से बचा कर उसे पानी से बाहर निकाल लिया। छोटा बहुत खुश हुआ। तभी उस तालाब के किनारे एक पत्थर दिखाई दिया। उसने उस पर लिख दिया, 'आज मेरे मित्र ने मेरी जान बचाई।' तब बड़े ने पूछा, भाई, क्या बात है, कभी तुम बालू पर कुछ लिखते हो, कभी पत्थर पर? छोटे ने उत्तर दिया, सफर में हम दोनों के बीच कोई बात हो जाती है तो उसे शंयर करने के लिए कोई तीसरा तो है नहीं इसलिए मन को हल्का करने के लिए कभी बालू का सहारा लेता हूँ, कभी पत्थर का। परन्तु इतना ध्यान अवश्य रखता हूँ कि नकारात्मक घटना बालू पर लिखूँ ताकि हवा के एक झोंके के साथ उड़ जाए और सकारात्मक घटना पत्थर पर लिखूँ ताकि यादगार बन जाए।

मित्र की गलतियों को चिन्तन पर न रखें

किसी ने ठीक कहा है, एक साल में 50 मित्र बनाना सरल है परन्तु एक ही मित्र से 50 साल तक निभा लेना बड़ी बात है। निभाने की शक्ति तब आती है जब हम मित्र के अन्तर्मन को समझ लेते हैं। दोस्त जैसा भी है, उसको उसी रूप में स्वीकार कर लेते हैं, जैसे कि माँ अपने नवजात को स्वीकार कर लेती है। दोस्त के राज्यों को सार्वजनिक न करें। उसके सुझावों का आदर करें। यदि सुझाव अति उत्तम है तो सार्वजनिक रूप से प्रशंसा करें। न तो मित्र को कमजोरी का नाजायज फायदा उठाएँ, न ही उसे गलत समझें, न ही उसकी गलतियों का फोल्डर बनाकर चिन्तन पर

रखें। पूरे साहस के साथ परिस्थितियों का सामना करना सिखाएँ।

दोस्ती का भाव स्वतः स्फुरित भाव है

दोस्ती का हाथ पाने का सबसे अच्छा तरीका है, दोस्ती का हाथ बढ़ाइये। दोस्ती का आधार है सिद्धांत, उन पर अडिग रहिए। मित्र की चापलूसी न कीजिए। उसकी कमियों के प्रति उसे जागरूक भी कीजिए। किसी ने यह भी उचित ही कहा है, अपने दुश्मनों को खत्म करने का सबसे उचित तरीका है कि उन्हें दोस्त बनालो। आप शत्रु से भी प्यार करें परन्तु मित्र से कभी भी नफरत न करें। हजारों दुश्मन मित्र बन जाएँ पर एक भी मित्र दुश्मन न बने, यह ध्यान अवश्य रखें। किसी पर दबाव डालकर या भय दिखाकर उसे दोस्त न बनाएँ, दोस्ती का भाव स्वतः स्फुरित भाव है। श्रेष्ठ चरित्र वह चुम्बक है जिसकी तरफ हजारों खिंचे चले आते हैं और ता उम उस चुम्बकीय व्यक्तित्व से चिपके-से रह जाते हैं। गुणों के धनी को गुणवान मित्र अपने आप मिल जाते हैं।

कपटी से मित्रता न करें

संत कबीरदास कहते हैं,

“कपटी मित्र न कीजिए, पेट पैठि बुधि लैत।

आगे राह दिखाय के, पीछे धक्का देत।”

इसका अर्थ है कि कपटी आदमी से मित्रता कभी न कीजिये क्योंकि वह पहले पेट में घुस कर सभी भेद जान लेता है और फिर आगे की राह दिखाकर पीछे से धक्का देता है। सच बात तो यह है कि मित्र ही मनुष्य को उबारता है और मित्र ही डुबोता है इसलिये मित्रों का संग्रह करते समय उनके व्यवहार के आधार पर पहले राय अवश्य करनी चाहिए। ऐसे अनेक लोग हैं जो प्रतिदिन मिलते हैं पर वे मित्र नहीं कहे जा सकते। आजकल के युवाओं को तो मित्र की पहचान ही नहीं है, क्यों? इसलिए कि साथ-साथ इधर-उधर घूमना, पिकनिक मनाना, शराब पीना या शैक्षणिक विषयों का अध्ययन करना, मित्रता का प्रमाण नहीं है। ऐसे अनेक युवक शिकायत करते हुए मिल जाते हैं कि 'अमुक

के साथ हम रोज पढ़ते हैं, वह हमसे नोट्स लेता पर अपने नोट्स देता नहीं है।'

सारी दुनिया को गलत कभी न समझें

अनेक युवक-युवतियाँ जब अपने मित्र से हताश होते हैं तो उनका दिल टूट जाता है। इतना ही नहीं, उनको सारी दुनिया ही दुश्मन नजर आने लगती है लेकिन इस बकाचौध की दुनिया में ऐसा भी देखा जाता है कि संकट पड़ने पर अजनबी भी कई बार सहायता कर देते हैं। इसलिये किसी एक से धोखा खाने पर सारी दुनिया को ही गलत कभी नहीं समझना चाहिए। अगर किसी व्यक्ति की आदत ही दूसरे का धोखा देने की हो तो फिर उससे मित्रता के धर्म के निर्वहन की आशा करना ही व्यर्थ है। संत कबीरदास जी का एक अन्य दोहा है, जो कहता है,

“कबीर तहाँ न जाईय, जहाँ न चोखा चीत।

परपूटा औगुन घना, दिखे ऊपर मीत।”

भावार्थ है कि ऐसे व्यक्ति या समूह के पास ही न जायें जिनमें निर्मल चित्त का अभाव हो। ऐसे व्यक्ति सामने मित्र बनते हैं पर पीठ पीछे अवगुणों का बखान कर बदनाम करते हैं। जिनसे हम मित्रता करते हैं उनसे सामान्य वार्तालाप में हम ऐसी अनेक बातें कह जाते हैं जो घर-परिवार के लिए महत्वपूर्ण होती हैं और जिनके बाहर आने से संकट खड़ा होता है। कथित मित्र इसका लाभ उठाते हैं। आधुनिक अपराधिक इतिहास पर दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि अपराध और धोखे का शिकार आदमी मित्रों की वजह से ही होता है। अतः जान लें कि प्रतिदिन कार्यालय, व्यवसायिक स्थान तथा शैक्षणिक स्थानों पर मिलने वाले सभी लोग मित्र नहीं होते। उनसे सामान्य व्यवहार और वार्तालाप तो अवश्य करें परन्तु उनको बिना परखे दिल के भेद न बताएँ।

भगवान बढ़ा रहे हैं दोस्ती का हाथ

मित्रता के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ता है वर्तमान संगमयुग पर जब सृष्टि के रचयिता, पालक, करनकरावनहार, त्रिलोकानाथ परमात्मा, पिताश्री

प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर मानव मात्र की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं और कहते हैं, मुझे यूज करो, मेरी शक्तियों को यूज करो। परम हितैषी, परम ऑफर करते हैं कि जो मेरा है, वो सब तुम्हारा है, उस पर अधिकार रखो। जैसे एक डाउन बैटरी वाली गाड़ी, दूसरी डाउन बैटरी वाली गाड़ी के साथ बांध भी दी जाए तो कौन किसको खींचे? इसी प्रकार डाउन बैटरी वाली एक आत्मा, डाउन बैटरी वाली दूसरी आत्मा को मित्र बना भी ले तो कौन, किसकी मदद करे? परन्तु यदि ये दोनों आत्माएँ, पावर हाउस परमात्मा से मित्रता कर लें तो दोनों चार्ज होकर, एक-दो का साथ बखूबी निभा सकते हैं। सुदामा, सुग्रीव, अर्जुन आदि को कहानियाँ, संगमयुग में धरती पर पधारें भगवान से मित्रता करने और निभाने की यादगार कहानियाँ हैं। चरित्र तो अनेक होते हैं परन्तु यादगारों में नाम कोई एक का ही प्रत्यक्ष होता है।

हर दिन 'मित्रता दिवस'

संगमयुग पर हम भगवान से जुड़कर आत्मा रूपी बैटरी को इतना भर लेंते हैं कि पूरे कल्प उसकी शक्ति कार्य करती रहती है। यह भगवान से दोस्ती करने का सुनहरा अवसर है। उसे अपना दिलदार बनाएँ, उससे दिल का सौदा कर लें। अपने दिल के राज बताकर उसे हमराज बना लें। उस दिलबर को दिल में बसाकर, दिल के द्वार अन्य वस्तु, व्यक्तियों के आकर्षण से बन्द कर लें। उसके स्नेह के झरनों में निरन्तर समाए रहें ताकि कोई स्वार्थ की प्रीत अपनी ओर खींचे ना। सारे मेरे-मेरे छोड़ उस एक में मेरा-पन ले आएँ तो सब कुछ हमारा हो जाएगा। परमात्मा पिता की ओर से आप सभी को ऐसी रूहानी अलौकिक मित्रता की बार-बार बधाई। एक दिवस नहीं, परमात्मा पिता के साथ हर दिन 'मित्रता दिवस' है। ❖

श्रद्धांजलि



मुखई, बडाला सेवाकेन्द्र पर सेवारत, मन, वचन, कर्म से बापदादा को प्रत्यक्ष करने वाली, सहनशीलता की मुर्त, सर्व की स्नेही तथा रहमादिल दादी रुक्मिणी 14 वर्ष की आयु में, सन् 1936 में पिताश्री ब्रह्मा बाबा द्वारा स्थापित ओम मण्डली में शामिल हुई। आपको शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान था। दादी आलराउन्डर आपकी बुआ लगती थी। पिछले कुछ समय से आपको हृदय की तकलीफ थी। 'अब घर जाना है' इस महामन्त्र की स्मृति के साथ 17 नई, 2018 को आप बापदादा की गोद में चली गईं। ऐसी यज्ञ की आदिरत्न, बापदादा की आज्ञाकारी, वफादार, दिलतख्तनशीन आत्मा को सर्व दैवी परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

जाग! जाग! रक्षा कर अपनी

ब्रह्माकुमार इन्द्रेन्द्र कुमार विद्यारो

शान्ति नगर, पटा (उ.प्र.)

औ गाली मत सो आलस में

जाग! जाग! रक्षा कर अपनी।

पहरदार वाटिका का तू

कैसी तैरी ऐसी करनी।।

भूल रहा क्या, बचप पिता से

दिय शपथ दे, मान रखूंगा।

तेजस्वा, पुरुषार्थी बनकर

धरा सुगन्धित सदा करूंगा।।

मूषक (माय्का) प्रवल वाटिका में है,

कुतर रहे वे बीज संसृजित।

सर्वनाश कर रहे देख ले

क्या सोता है मार्थ निशकित।।

तुमको दी है दिव्य कलाये

अख, राक्ष से किचा सुसंजित।

मार भगा इन मूषक डल को

वीर साहसी क्या तू संजित।।

अहंकार के बशीभूत हो,

माया ने क्या किया पंगुवत।

शान्ति, सौम्यता से हो विवृत,

सज्जाओं ने किया वशीकृत।।

लोभ-माह को जग छुड़ाकर,

क्रोध बुड़ा, मन शुद्ध बना ले।

रक्षा कर बीजी को प्रतिफल

सुगन्ध वाटिका सरस बन ले।।

औ गाली मत सो आलस में

जाग! जाग! रक्षा कर अपनी।

पहरदार वाटिका का तू

कैसी तैरी ऐसी करनी।।

क्या गुस्सा सहज और स्वाभाविक है?

ब्रह्माकुमारी दीपा सबसेना, मालवीय नगर, नई दिल्ली

क्रोध, गुस्सा, रोब, आक्रोश सभी शब्द लगभग समान अर्थ लिए हुए हैं। प्रश्न यह है कि क्या गुस्सा सहज है? स्वाभाविक है? आवश्यक है?

गुस्सा या क्रोध एक आवेगपूर्ण भाव है जो नकारात्मक ऊर्जा लिये हुए है। कई मनोवैज्ञानिक तथा दार्शनिक इसे हानिकारक बताते हैं। उनके अनुसार, गुस्से का भाव हमारे शरीर पर, मस्तिष्क पर, रिश्तों पर तथा समाज पर घातक प्रभाव डालता है।

गुस्से की प्रक्रिया

जब गुस्सा आता है तो शरीर में 'एड्रेनाईन' तथा 'कोर्टिसोल' नामक हार्मोन बनते हैं जिनके कारण कई शारीरिक तथा भावात्मक लक्षण उत्पन्न होते हैं।

शारीरिक लक्षण

हृदयगति बढ़ जाना, श्वास का जल्दी-जल्दी चलना, रक्त प्रवाह का बढ़ जाना, रक्त-दबाव का बढ़ जाना, आँख की पुतलियों का फैल जाना आदि-आदि।

भावनात्मक लक्षण

आसुओं का निकलना, दुखी होना, एकान्त में रहना आदि-आदि। इसके अतिरिक्त चोखना, चिल्ला-चिल्लाकर बोलना, कभी-कभी तो हिंसक भी हो जाना।

गुस्से के अधिक समय तक चलने से शरीर में कई विषैले रसायन जमा हो जाते हैं जो कई तरह के शारीरिक तथा मानसिक रोगों को जन्म देते हैं। हमारे सौचने-समझने की प्रक्रिया बाधित होने लगती है और हम सही निर्णय नहीं ले पाते। कई बार तो 'गुस्से' की अवस्था में लिया गया निर्णय हमें जिन्दगी भर गलताने पर मजबूर कर देता है। गुस्से में ऐसे शब्दों का चुनाव अनायास हो जाता है जो अभद्र तथा अशिष्ट होते हैं और उनका प्रभाव हमारे रिश्तों और समाज पर बहुत ही प्रतिकूल पड़ता है।

'हर भाव' के पीछे हमारी एक विचारधारा काम करती है। हमारे विचार, हमारे द्वारा ही निर्मित होते हैं अर्थात् हम अपने विचारों के निर्माता स्वयं हैं या यूँ कहें, हमारे द्वारा उत्पन्न विचार ही हमारे भावों को जन्म देते हैं। यदि प्रेम के विचार होंगे तो प्रेम का भाव होगा, ईर्ष्या के विचार होंगे तो ईर्ष्या का भाव जागेगा, करुणा के विचार होंगे तो दया का भाव जागेगा। स्पष्ट है कि ऐसे विचार, जो क्रोध के भाव को जन्म देते हैं, हमारे द्वारा ही उत्पन्न किये हुए होते हैं।

अब हम यह कह सकते हैं कि विशेष परिस्थिति में, विशेष विचार निर्मित हुए जिनसे गुस्सा आया। किसी व्यक्ति ने ऐसी बात कह दी या कर दी जिसके फलस्वरूप गुस्सा आना स्वाभाविक हो गया। यहाँ यह समझना जरूरी है कि क्या कोई बाह्य परिस्थिति या व्यक्ति हमारे मन के भीतर घुसकर इन गुस्से वाले विचारों का निर्माता बन सकता है? याद रहे, विचारों का निर्माण करना हमारी अपनी जिम्मेदारी है। हम कह सकते हैं कि बाहरी परिस्थिति या व्यक्ति मेरे प्रतिकूल हो सकते हैं लेकिन मेरे विचार उस परिस्थिति में किन गुणों के हों, यह मेरी निजी जिम्मेदारी है।

जरा सोचिये, यदि समान प्रतिकूल परिस्थिति दस व्यक्तियों को दी जाये तो क्या दसों की समान प्रतिक्रिया होगी? निश्चित तौर पर सभी की अलग-अलग प्रतिक्रिया होगी। अतः प्रतिक्रिया स्वयं पर निर्भर करती है। गुस्सा करने की प्रक्रिया का उत्तरदायित्व भी हमारे पर अर्थात् स्वयं पर है।

गुस्सा क्यों आता है?

क्या कारण है कि व्यक्ति अपने वास्तविक शान्त स्वरूप से 'गुस्सैल' के सम्बोधन तक पहुँच जाता है। इतना ही नहीं, कई प्रकार के शारीरिक और मानसिक विकारों

का भी शिकार हो जाता है। गुस्सा आने के कारणों को हम मोटे तौर पर दो भागों में बाट सकते हैं –

आन्तरिक कारण

इनमें व्यक्ति का अस्वस्थ होना, थकान, मनोवैज्ञानिक दबाव, ईर्ष्या, अहंकार, लालच आदि हो सकते हैं।

बाहरी कारण

बाहरी परिस्थिति से उत्तेजित होकर और वातावरण के प्रतिकूल प्रभाव के कारण गुस्सा आ जाता है।

संक्षिप्त में कहें तो गुस्सा तब आता है जब व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार कार्य का फल नहीं मिलता या उसके विचारों के अनुसार कार्य नहीं होता। यहाँ यह समझना जरूरी है कि गुस्सा आने का कारण मेरी अपनी इच्छाएँ और उम्मीदें हैं जो फलीभूत न होने पर मेरे गुस्से का कारण बनती हैं। मैं अगर दूसरों से किसी काम की उम्मीद रखूँ और वो पूरी न हो तो गुस्सा आना स्वाभाविक लगता है परन्तु क्या यह सही है? ऑफिस में बॉस अपने नीचे काम करने वालों पर, मालिक नौकर पर, अध्यापक विद्यार्थी पर, माता-पिता बच्चों पर, बलशाली व्यक्ति निर्बल पर गुस्सा होते हैं। अधिकतर मनुष्य किसी गलती का उत्तरदायित्व स्वयं न लेकर दूसरों को दोषी मानते हैं। क्या गुस्सा करके हम दूसरों की कार्यक्षमता बढ़ा सकते हैं? यह एक बड़ा सवाल है। गुस्सा कभी भी लाभकारी नहीं होता। इससे होने वाले हानिकारक प्रभाव हम समझ चुके हैं।

गुस्सा आने का एक कारण हमारा अहंकार है। दूसरों को डाँट कर, नीचा दिखा कर, उन पर हावी होकर, उनकी कमियाँ निकालकर हम अपने को उनसे ज्यादा श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण समझते हैं। क्या ऐसा नहीं है? स्वयं विचार कीजिए। आइये, अब गुस्से के भाव से सम्बन्धित कुछ विचारधाराओं का मूल्यांकन करें –

लोग गुस्सा दिलाते हैं

उन्होंने गलती की तो गुस्सा तो आयेंगा ही अर्थात् गुस्सा होने के अलावा कोई विकल्प ही नहीं रह जाता। अब समझें

– उन्होंने तो सिर्फ कहा या किया ही है जो मेरे प्रतिकूल है। उससे गुस्से की प्रतिक्रिया तो मैं कर रहा हूँ। याद कीजिये, कभी ऐसा भी तो होता है, जब हमारा मूड अच्छा होता है, तो कोई बड़ी बात, जो हमारे प्रतिकूल हो, हमको ज्यादा गुस्सा नहीं दिलाती। बच्चों को भी मालूम होता है, जब मम्मी-पापा का मूड अच्छा होता है तो फाइल में गलत एन्ट्री पर भी डाँट नहीं पड़ती अर्थात् यह बात स्पष्ट हो जाती है कि गुस्से की प्रतिक्रिया के लिये मैं स्वयं उत्तरदायी हूँ।

गुस्सा करने से काम हो जाता है

हम जानते हैं, गुस्सा नकारात्मक ऊर्जा से भरा भाव है। इसका प्रयोग करके हम कभी भी सकारात्मक परिणाम नहीं हासिल कर सकते। अगर हम मान भी लें कि गुस्सा करने से काम हो जाता है तो वो अस्थाई ही होगा और उसमें गुणवत्ता होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। मुझे याद है, एक गार्मेंट-एक्सपोर्ट कम्पनी का मालिक अपने कारीगरों को रोज डाँटता-डपटता था। अक्सर गुस्सा करता था। उसका कहना था कि डाँटते-डपटते रहने से कार्य समय रहते पूरा हो सकेगा। उसने काम पूरा तो कर लिया लेकिन जब 'माल' विदेश पहुँचा तो गुणवत्ता की कसौटी पर खरा न उतरने से सारे माल को अस्वीकार कर दिया गया जिससे कम्पनी मालिक को बहुत भारी नुकसान हुआ। कारीगरों की कार्यक्षमता को बढ़ाने का साधन गुस्सा नहीं, प्रेम और प्रेरणा होता है – यह पाठ उसने बाद में सीखा। अतः गुस्से से काम नहीं होता वरन् अपनी बात को मनवाने के लिये, काम कराने के लिये, प्रेम, प्रेरणा तथा विचारों में दृढ़ता की आवश्यकता होती है।

गुस्से की विभिन्न अवस्थाएँ

छोटी-छोटी बातों पर झुंझलाहट, चिड़चिड़ाहट गुस्से की शुरूआती अवस्था है जैसे कि ट्रैफिक जाम में फँसने पर चिड़चिड़ापन, कम्प्यूटर पर लॉग ऑन होने में देरी होने से चिड़चिड़ाहट, किसी योजना पर एकाग्र होने के समय, किसी बच्चे के रोने से बौखलाहट आदि-आदि।

कई बार निराशावादी विचारों के कारण व्यक्तित्व में गुस्सा पनपने लगता है जैसे कि 'कोई भी काम नहीं बन रहा', 'जिन्दगी का मजा नहीं आ रहा' आदि-आदि। परिस्थितियों के बदलने का इन्तजार करते रहने से धीरे-धीरे गुस्सैल स्वभाव बनता जाता है। इसके अतिरिक्त किसी के प्रति अति गहरी नफरत भी क्रोध को जन्म देती है। कभी जीवन में कहीं गलत हुआ हो तो उसी उधेड़बुन में लगे रहते हैं कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? समाधान खोजने के बजाय सबालों के घेरे में घिरे रहते हैं। जवाब हासिल करने में असफल हो जाने से हम क्रोधी स्वभाव के बनते जाते हैं।

क्रोध से छुटकारा कैसे पायें?

- 1) गुस्से की प्रारंभिक अवस्था 'चिड़चिड़ाहट' पर ही सजग हो जायें। परिस्थिति आपके वश में नहीं परन्तु आपकी शान्ति, आपके वश में निश्चित तौर पर है।
- 2) स्वीकारें कि आप चिड़चिड़ाते हैं, झुँझलाते हैं। समझाइये अपने आपको परिस्थिति को स्वीकारते हुए बिना विचलित हुए सम्भावित समाधान या परिवर्तन सोचिये। लम्बी सांस लीजिये, शान्त होने का प्रयास कीजिये।
- 3) दूसरों से उनकी क्षमताओं के अनुसार ही अपेक्षा रखिए और उसी अनुसार उन्हें प्रेरित कीजिए, प्रभावित कीजिए।
- 4) रोज सोने से पूर्व चैकिंग कीजिए

- आज दिन में किस-किस बात पर गुस्सा आया?
- क्या गुस्से के बगैर काम हो सकता था?
- क्या गुस्सा मुझे पसन्द है?
- क्या गुस्सा मुझे नुकसान पहुँचा रहा है?
- क्या मैं गुस्से पर विजय प्राप्त कर सकता हूँ?

तत्पश्चात् अपने मूल स्वरूप को याद कीजिए कि मैं एक शान्त स्वरूप आत्मा हूँ, शान्ति मेरा निजी गुण है। क्रोध सहज नहीं है, यह हानिकारक है। कोई मुझे दुख नहीं पहुँचाता, अपने दुख का कारण मैं स्वयं हूँ। मुझे स्वयं इस

दुख से बाहर निकलना है।

याद रहे, गुस्सा एक नकारात्मक ऊर्जा से भरा भाव है। जिसके प्रति हम इसे पैदा करते हैं उसकी तरफ से वापसी में यही ऊर्जा हम पाते हैं। अतः यह किसी भी रूप में लाभप्रद नहीं है।

अन्त में एक और मान्यता की ओर ध्यान खिंचवाना चाहूँगी। कई मनोवैज्ञानिक भी इसी ओर इशारा करते हैं कि गुस्सा दबाना नहीं चाहिए बल्कि समय-समय पर जाहिर करना चाहिए। परन्तु सोचिये, अगर हम हर बार गुस्सा निकालते रहेंगे तो गुस्सा होने के संस्कार को बनने से रोक तो पायेंगे नहीं बल्कि गुस्सा निकालने को निरन्तरता से इस संस्कार को मजबूत अवश्य बना देंगे। इसका एक ही निवारण है, गुस्से को नकारात्मक ऊर्जा को सकारात्मक ऊर्जा में बदला जाये। आध्यात्मिक नियमों का पालन करके हम क्रोधमुक्त हो सकते हैं।

बौद्ध धर्म के महान अनुयायी के अनुसार, गुस्सा करने से हम इसे और मजबूती से अपनाते जाते हैं। इसको सिर्फ एक हथियार से पराजित कर सकते हैं, वो है सबके प्रति 'सद्भावना'। ❖



एक महान युग पुरुषोत्तमनी की

ब्रह्माकुमार देवेन्द्र नागयण पटेल, मुंबई, मुंबई



चारों तरफ समुद्र का पानी, बीच में बसा हुआ एक शहर था। उस शहर में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखा की संचालिका

बहन को संकल्प आया कि सारे शहरवासियों को शिव बाबा का परिचय देना चाहिए। उसके लिए वहाँ पर एक प्रदर्शनी रखी गई। सवेरे दस बजे से प्रदर्शनी प्रारंभ की गई। शहर के लम्बे पुरातन इतिहास काल में पहली बार इस प्रकार की नई प्रदर्शनी होने के कारण वहाँ पर बहुत ही भीड़ इकट्ठी हो गई। बहन बहुत ही सुचारू रूप से सबको समझा रही थी। लोग ध्यान से सुन रहे थे। धीरे-धीरे दोपहर हो गई। बहन ने एक भाई को कहा, मैं सेवाकेन्द्र पर जाती हूँ। बाद में सामान समेट कर सेवाकेन्द्र पर लेकर आना।

जो भी सेवाधारी भाई थे, वे धीरे-धीरे वापस चलने लगे। उनको ड्यूटी पर जाना था, छुट्टी नहीं थी। अब वो भाई अकेला ही रह गया। लोग तो अभी भी आ ही रहे थे, वह भाई सबको प्यार से समझा भी रहा था। बाद में इस भाई ने प्रदर्शनी बंद की। समेटते-समेटते दो बज गये। समेटकर, सामान को लेकर सेवाकेन्द्र पर आया। सेवाकेन्द्र का दरवाजा बंद था। उस भाई ने घंटी बजाई तो वह बहन स्वयं आयी और दरवाजा खोला और बड़े प्यार से बैठाकर पानी पिलाया। उस भाई को इस निमित्त बहन के सिवाय कोई दिख नहीं रहा था, बाकी सब बहनें आराम करने चली गई थीं। भाई ने बहन से कहा, मैं जाता हूँ। बहन बोली, भाई, आप कब ट्रेन पकड़ेंगे, कब मलाड पहुँचेंगे, कब जाकर खाना बनायेंगे, कब खायेंगे, एक घंटा तो ट्रेन में

लग जायेगा, आप बैठ जाओ, मैं गरम-गरम खाना तुरंत बनाकर लेके आती हूँ। वह बहन किचन में गई, किसी भी बहन को जगाया नहीं, खुद ही आटा गूथकर फटाफट रोटी और सब्जी बनाकर पंद्रह मिनिट में लेकर आयी और कहा, भाई खालो, मैं सामने बैठती हूँ।

वह भाई भोजन करके जाने की तैयारी कर रहा था परंतु पैर खिसक नहीं रहे थे। आँखों में प्यार के आँसू टपकने लगे। यह देखकर बहन बोली, क्यों भाई, क्या हो गया? उस भाई ने कहा, बहनजी, आपने इतनी तकलीफ क्यों उठाई? आराम करने का समय है। आप दूसरी बहन को जगाकर उसको खाना बनाने को कह सकते थे। आपने ही क्यों बनाया? आप ही दरवाजा खोलने आयी, खुद ही पानी पिलाया, फिर ग्लास खुद ही रखने गये। मेरी थाली भी साफ करने आप स्वयं ही लगे। आप दूसरों को कह सकते थे। तब वह बहन बोली, भाई, दोपहर का समय है, तीन बज रहे हैं। सब बहनें मेरे से उम्र में छोटी हैं, उनकी आराम की सख्त जरूरत है, मैं बड़ी हूँ, मुझे एक दिन आराम नहीं मिलेगा तो क्या फरक पड़ेगा। आप भी सेवा करके थककर आये हो, आप को भी कड़ी भूख लगी थी इसलिए मैंने समय बरबाद न करते हुए फटाफट खाना बना दिया, ठंडा खाना खिलाना अच्छा नहीं है।

जानते ही वह बहन कौन थी? वह बहन थी राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी। माँ की मधुर ममता से भरपूर, दूसरों की तकलीफों का ख्याल करने वाली, दयाभाव रखने वाली और परोपकारी होने के कारण वह आगे चलकर मुंबई सेवाकेन्द्र की संचालिका से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के हजारों सेवाकेन्द्रों की मुख्य संचालिका बन गई। ❖



ब.कु. आत्मप्रकार, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन - 307510, आबू रोड में प्रकाशिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए उपजाया। संयुक्त सम्पादिका - ब.कु. उर्मिला, शान्तिवन

►► फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये: E-mail: gyanamritpatrika@bktv.org

Website: gyanamri.bktv.in Ph. No.: (02974) - 228125



1. चितवन (नेपाल) : 'सकारात्मक सोच द्वारा रचनात्मक जीवन-शैली' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए एएफयू के वाहसचांसलर भाता आईपी. ढकाल, सांसद भाता तिलक महाट, प्रदेश नं. 3 के विधानसभा अध्यक्ष भाता शनुका जी श्रेष्ठ, ब्रह्माकुमारी राज बहन, ब्रह्माकुमार राजू भाई तथा अन्य। 2. रायपुर (छत्तीसगढ़) : मेडिकल विंग द्वारा आयोजित विहासा ट्रेनिंग कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए पं.ज.ला. नेहरू मेमोरियल शासकीय मेडिकल कॉलेज की डीन डॉ. आभा सिंह, बालाजी सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. देवेन्द्र नाथक, मुम्बई के डॉ. मनोज मत्तानी जी, ब्रह्माकुमारी कमला बहन तथा अन्य। 3. लखनऊ : 'परास्त करें डायबिटीज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्रह्माकुमारी राधा बहन, महापौर बहन संयुक्ता भाटिया, प्राविधिक तथा चिकित्सा शिक्षामंत्री भाता आशुतोष टण्डन, डॉ. श्रीमन्त साहू तथा ग्राम विकास मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह। 4. मुरैना (मध्यप्रदेश) : स्वास्थ्य मंत्री भाता रुस्तम सिंह गुर्जर "खुशियाँ आपके द्वार" विषयक शिविर का उद्घाटन करते हुए। साथ में हैं प्रो. ब्रह्माकुमार ओंकार भाई तथा ब्रह्माकुमारी रेखा बहन। 5. अजमेर (वेल्थू सेन्टर) : राजस्थान की महिला तथा बाल विकास मंत्री बहन अनिता बघेल, ब्रह्माकुमारी शान्ता बहन तथा अन्य वृक्षारोपण की तैयारी में। 6. ग्वालियर (इन्द्रगंज) : अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर केन्द्रीय मंत्री भाता नरेन्द्र सिंह तोमर, ब्रह्माकुमारी आदर्श बहन को सर्टिफिकेट प्रदान करते हुए। साथ में हैं म.प्र. के केबिनेट मंत्री भाता नारायण सिंह कुशवाहा, नगरीय विकास एवं आवास मंत्री बहन माया सिंह और अन्य। 7. आगरा (म्यूजियम) : अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में उ.प्र. के खेलमंत्री एवं क्रीड़ा भारती के प्रमुख भाता चेतन चौहान जी, ब्रह्माकुमारी मधु बहन को मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित करते हुए। 8. आगरा (ईदगाह) : डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविन्द दौक्षित, ब्रह्माकुमारी अश्विना बहन को सम्मानित करते हुए।

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर दादी जानकी जी का दिव्य-संदेश

विश्व-रक्षक परमपिता परमात्मा शिव के स्नेह, ज्ञान, गुण और शक्तियों के कवच में सदा सुरक्षित रहने वाले सर्व भाई-बहनें, आप सर्व को पावन रक्षाबंधन तथा जन्माष्टमी की कोटि-कोटि बधाईयाँ। विश्वपिता के हम सभी विश्वभर के रूहानी बच्चे आपस में भाई-भाई हैं। बेहद की भावनाओं से जोड़ने वाला, बुराइयों से हम सर्व की रक्षा करने वाला, एक की याद द्वारा एकता के सूत्र में पिरोने वाला, उमंग-उत्साह और खुशी की खुराक से निरोगी और दीर्घायु बनाने वाला यह प्यारा रक्षाबंधन हम सर्व के लिए अमूल्य ईश्वरीय उपहार है।

परमात्मा पिता की दिव्य-शिक्षाओं का पालन करते हुए हम मन-वचन-कर्म और स्वप्न में भी पूर्ण पवित्रता को अपनाएँ, यह इस पर्व का पावन संदेश है। दिल की शुभकामना है कि समय की पुकार को सुनते हुए, रहमदिल बनकर, 'पवित्र भव-योगी भव' के मंत्र को याद रखते हुए दृढ़ संकल्प से इस रक्षा-सूत्र को कलाई पर बाँधें। मधुर बोल की अविनाशी मिठाई एक-दो को खिलाएँ और मस्तक पर आत्म-स्वरूप में टिकने का टीका लगाएँ। पवित्रता, मधुरता और दृढ़ता की यह धारणा आपको सदा खुशानसीब बना देगी।

